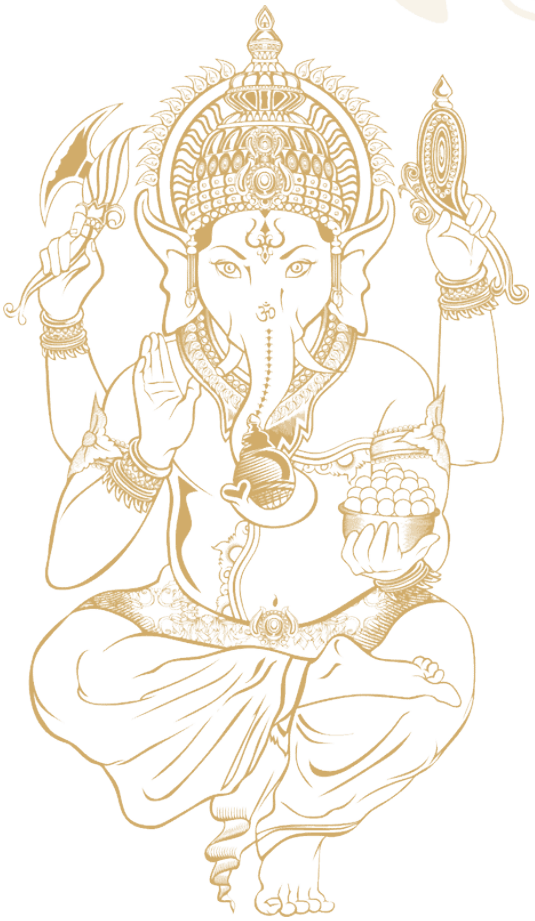

J

P

Model: Web-FreeMatching

Order No: 120913304

पुल्लिंग	लिंग	स्त्रीलिंग
21/05/1997	जन्म तिथि	11-12/03/1998
बुधवार	दिन	बुध-गुरुवार
घंटे 15:28:00	जन्म समय	03:29:00 घंटे
घटी 25:01:14	जन्म समय(घटी)	52:12:11 घटी
India	देश	India
Delhi	स्थान	Delhi
28:39:00 उत्तर	अक्षांश	28:39:00 उत्तर
77:13:00 पूर्व	रेखांश	77:13:00 पूर्व
82:30:00 पूर्व	मध्य रेखांश	82:30:00 पूर्व
घंटे -00:21:08	स्थानिक संस्कार	-00:21:08 घंटे
घंटे 00:00:00	ग्रीष्म संस्कार	00:00:00 घंटे
05:27:30	सूर्योदय	06:36:07
19:07:41	सूर्यास्त	18:26:48
23:49:11	चित्रपक्षीय अयनांश	23:49:49

विंशोत्तरी	अंश	राशि	ग्रह	राशि	अंश	विंशोत्तरी
गुरु 10वर्ष 3मा 26दि	20:04:53	कन्या	लग्न	धनु	28:12:31	शुक्र 19वर्ष 11मा 7दि
शनि	06:34:03	वृष	सूर्य	कुंभ	27:17:41	चन्द्र
17/09/2007	24:43:51	तुला	चंद्र	सिंह	13:22:32	17/02/2024
16/09/2026	26:02:52	सिंह	मंगल	मीन	11:45:54	17/02/2034
शनि 19/09/2010	11:29:42	मेष	बुध	मीन	12:31:36	चन्द्र 17/12/2024
बुध 30/05/2013	27:30:48	मक	गुरु	कुंभ	14:40:24	मंगल 19/07/2025
केतु 08/07/2014	19:19:03	वृष	शुक्र	मक	11:56:11	राहु 17/01/2027
शुक्र 07/09/2017	22:28:50	मीन	शनि	मीन	25:29:47	गुरु 18/05/2028
सूर्य 20/08/2018	02:58:21	कन्या व	राहु	सिंह	16:45:26	शनि 18/12/2029
चन्द्र 20/03/2020	02:58:21	मीन व	केतु	कुंभ	16:45:26	बुध 19/05/2031
मंगल 29/04/2021	14:49:33	मक व	हर्ष	मक	17:11:10	केतु 18/12/2031
राहु 05/03/2024	06:02:14	मक व	नेप	मक	07:34:14	शुक्र 18/08/2033
गुरु 16/09/2026	10:31:15	वृश्चि व	प्लूटो व	वृश्चि	14:13:59	सूर्य 17/02/2034

लग्न-चलित

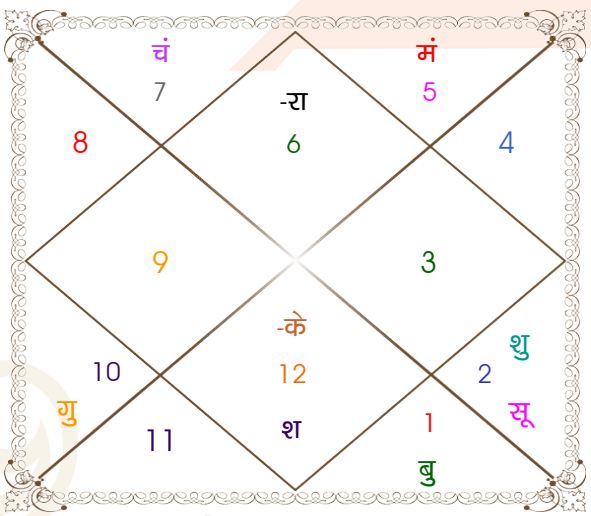

लग्न-चलित

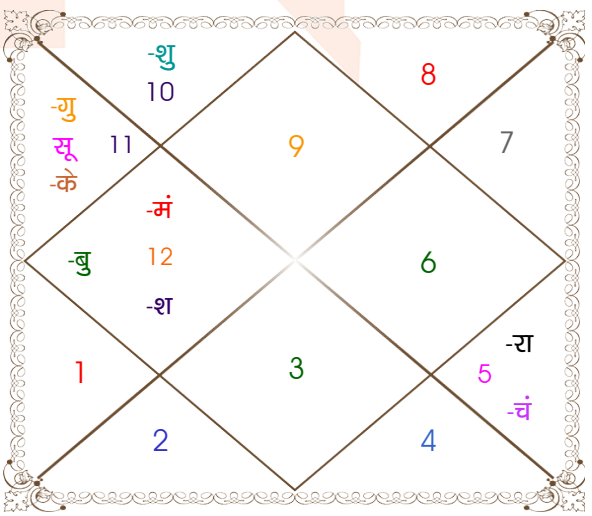

अष्टकूट गुण सारिणी

कूट	वर	कन्या	अंक	प्राप्त	दोष	क्षेत्र
वर्ण	शूद्र	क्षत्रिय	1	0.00	--	जातीय कर्म
वश्य	मानव	वनचर	2	0.00	--	स्वभाव
तारा	साधक	प्रत्यारि	3	1.50	--	भाग्य
योनि	व्याघ्र	मूषक	4	2.00	--	यौन विचार
मैत्री	शुक्र	सूर्य	5	0.00	--	आपसी सम्बन्ध
गण	राक्षस	मनुष्य	6	0.00	हाँ	सामाजिकता
भकूट	तुला	सिंह	7	7.00	--	जीवन शैली
नाड़ी	अन्त्य	मध्य	8	8.00	--	स्वास्थ्य/संतान
कुल :			36	18.50		

गणदोष कष्टदायक है क्योंकि दोनों के राशि स्वामियों मे मित्रता नहीं है।

श्र का वर्ग सर्प है तथा च का वर्ग मूषक है। इन दोनों वर्गों में परस्पर सम है।

अष्टकूट मिलान के अनुसार श्र और च का मिलान औसत है।

मंगलीक दोष मिलान

श्र मंगलीक है क्योंकि मंगल लग्न कुण्डली में द्वादश भाव में स्थित है।

च मंगलीक है क्योंकि मंगल लग्न कुण्डली में चतुर्थ भाव में स्थित है।

श्र तथा च में मंगलीक मिलान ठीक है।

निष्कर्ष

अष्टकूट एवं मंगलीक दोष न होने के कारण दोनों का मिलान उत्तम हैं।